कुमार जीवन - 49

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार सदा निर्विघ्न हो ना? माया आकर्षित तो नहीं करती? कुमारों को माया अपना बनाने की कोशिश बहुत करती है। माया को कुमार बहुत परन्द आते हैं। वह समझती है मेरे बन जाएँ। लेकिन आप सब तो बहादुर हो ना! माया के मुरीद नहीं, माया को चेलेन्ज करने वाले। **आधा कल्प माया के मुरीद रहे, मिला क्या? सब कुछ गँवा दिया। इसलिए अभी प्रभू के बन गये।** प्रभू का बनना अर्थात् स्वर्ग के अधिकार को पाना। तो सभी कुमार विजयी कुमार हैं। देखना, कच्चे नहीं होना। माया को कुमारों से एकस्ट्रा प्यार है इसलिए चारों ओर से कोशिश करती है मेरे बन जाएँ। लेकिन आप सबने संकल्प कर लिया। जब बाप के हो गये तो निस्फुरने हो गये। **"सदा निर्विघ्न भव, उड़ती कला भव"। (03-12-1984)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ जैसे जैसे योगी तपस्या के मार्ग पर आगे बढता है

→ वैसे वैसे माया और ज्यादा सूक्षम होती जाती है

- जहां जहा मेरा आता है... वहाँ वहाँ माया आती है
  - **"मेरा" + संसार की कोई वस्तु = माया**
  - "मेरा त्याग... मेरी तपस्या... मेरी सेवा... मेरी आईडिया... मेरा भाषण" - यह भी माया है
  - माया भी श्वेत वस्त्र धारण कर और बैज लगाकर आती है
  - बिच्छू का मुख्य स्वभाव है :- डंक मारना और माया का मुख्य स्वभाव है :- धोखा देना

➳ _ ➳ विकारों के संकल्प और विकारों की कल्पना से बचें

→ क्योंकि वह एक दिन साकार हो जायेगा

- क्योंकि काम विकार को मात्र एक छोटे से अवसर की तलाश है

➢➢ देह भान / देह अभिमान / देह अहंकार

➳ _ ➳ देह भान

→ सतयुग से

→ देह भान है तभी तो विवाह करते हैं

- कलाएं तो सतयुग में पहले क्षण से ही कम होना शुरू हो जाती है
  - पर पवित्रता की शक्ति के कारण विकार में नहीं जाते

➳ _ ➳ देह अभिमान

→ द्वापर युग से

➳ _ ➳ देह अहंकार

→ प्रचंड कलयुग में